ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा न इन्द्र परा वृणक्। सामवेद 260
हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! हमारा त्याग मत करो।
O Bounteous Lord ! Kindly do not forsake us.

वर्ष 36, अंक 40 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 26 अगस्त, 2013 से रविवार 1 सितम्बर, 2013 तक
विक्रमी सम्वत् 2070 सृष्टि सम्वत् 1960853114
दयानन्दाब्द : 189 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली की आर्यसमाजों द्वारा आर्यसमाज पंजाबी बाग (प.) में स्वाधीनता दिवस पर ध्वजारोहण एवं

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पदाधिकारियों का अभिनन्दन समारोह सम्पन्न

प्राचीन भारतीय संस्कृति मूल्यों एवं धरोहर की रक्षा करना विश्वविद्यालय की स्थापना का उद्देश्य- डॉ. योगानन्द

स्वामी श्रद्धानन्द के स्वप्नों के गुरुकुल का निर्माण होगा लक्ष्य – महाशय धर्मपाल

आर्यजनता की आकांक्षाओं को पूर्ण करने का प्रयास होगा – ब्र. राजसिंह आर्य

गुरुकुल की भूमि एवं सम्पत्ति की रक्षा का कार्य हमारी प्रथम वरीयता – धर्मपाल आर्य

वर्तमान हालात दयनीय, संचालन और सम्वर्धन एक कठिन चुनौति – डॉ. सुरेन्द्र कुमार

नई टीम की ओर समस्त विश्व की नजरें
– आचार्य बलदेव, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्य समाज पंजाबी बाग पश्चिम में गत 15 अगस्त 2013 को 67वें स्वतन्त्रता दिवस समारोह के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा व आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली द्वारा ध्वजारोहण, देश भक्ति गीत एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के नव नियुक्त पदाधिकारियों का अभिनन्दन एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

समारोह में आर्य समाज से जुड़े हुए कई गणमान्यों व्यक्तियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। समारोह में शामिल हुए सदस्यों को आचार्य बलदेव जी (प्रधान, सार्वदेशिक सभा) का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता ब्र. राज सिंह आर्य (प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) ने की।

समारोह के दौरान महाशय धर्मपाल जी (अध्यक्ष, आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी) डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी (कुलपति) एवं गुरुकुल कांगड़ी से जुड़े कई गणमान्य व्यक्तियों का अभिनन्दन एवं सम्मान किया गया।

इस अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार एवं आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी के अध्यक्ष महाशय धर्मपाल का

– शेष सूचना एवं चित्रमय झांकी पृष्ठ 5 एवं 6 पर

सम्मान समारोह के अवसर पर मंचस्थ सभा प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य, माता प्रेमलता शास्त्री, डॉ. सविता आनन्द, डॉ. सुरेन्द्र कुमार डॉ. योगानन्द शास्त्री, महाशय धर्मपाल जी, सार्वदेशिक सभा के प्रधान आचार्य बलदेव, हरियाणा सभा के प्रधान आचार्य विजयपाल, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती एवं आचार्य यशपाल।

दिल्ली देहात के औचन्दी ग्राम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित

दीवानचन्द स्मारक गोकुल चन्द आर्य धर्मार्थ चिकित्सालय, औचन्दी

निर्माण के दो चरण पूर्ण होने पर

उद्घाटन समारोह | **ग्रामीण क्षेत्रीय आर्य सम्मेलन** | **तृतीय चरण की आधारशिला**

रविवार 15 सितम्बर, 2013 प्रात: 10 बजे से 2 बजे तक

यज्ञ : प्रात: 10 बजे ★ उद्घाटन : प्रात: 11 बजे ★आर्य सम्मेलन प्रात: 11:30 बजे

★ इस अवसर पर चिकित्सालय निर्माण में विशेष सहयोग देने वाले महानुभावों का सम्मान किया जाएगा ★

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाएं। कृपया कार्यक्रम के उपरान्त प्रीतिभोज अवश्य ग्रहण करें

संयोजक : मा. गंगाराम (प्रधान), महेन्द्र सिंह आर्य (मन्त्री) एवं आर्यसमाज औचन्दी के समस्त अधिकारी एवं सदस्यगण

वेद-स्वाध्याय

मैं अपनी शक्तियों को नहीं जानता

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

होत्रादहं वरुण बिभ्यदायं नेदेव मा युनजन्नत्र देवाः। तस्य मे तन्वो बहुधा निविष्टा एतमर्थं न चिकेताहमग्निः।। ऋ.10/51/4

अर्थ—**(वरुण)** हे वरणीय देव! **(अहम्)** मैं आत्मा **(होत्रात्)** अग्नि के समान सबको अपना ग्रास बनाने वाली मृत्यु से **(बिभ्यत्)** भयभीत हुआ **(आयम्)** तुम्हारी शरण में आया हूँ। **(न इत् एव)** न ही **(मा)** मुझे **(देवाः)** इन्द्रियाँ **(अत्र युनजन्)** अपने विषयों में खींचे **(तस्य मे)** मुझ आत्मा की **(बहुधाः तन्वः निविष्टाः)** बहुत सी शक्तियाँ छिपी हुई हैं **(एतम् अर्थम्)** जिन्हें **(अहम् अग्निः)** मैं आत्मा **(न चिकेत)** नहीं जान पाया हूँ।

भय मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। अपने से निर्बल को डराना और शक्तिशाली के आगे जैसे कुत्ता अपनी पूंछ को पैरो में दुबका कर निकल जाता है वैसे ही प्रवृत्ति मनुष्यों की है।

योगदर्शन में इसे अभिनिवेश क्लेश कहा है—**स्वरसवाही विदुषोऽपि तथारूढोऽभिनिवेशः** (योग० २.९)

सभी प्राणियों की यह इच्छा रहती है कि वे सदा बने रहें, मृत्यु को प्राप्त न होवें। ऐसा इस कारण होता है कि जीवात्मा ने पूर्वजन्मों में मृत्यु का साक्षात् अनुभव किया है। किसी क्षुद्र कीट को तिनके से छेड़ने पर वह मरने से बचने के लिये उस स्थान से दूर भागता दिखाई देता है और किसी सुरक्षित स्थान में आश्रय लेने का उपाय करता है। यह मृत्यु का भय या दुःख मूर्ख और विद्वान् दोनों में समान रूप से देखा जाता है।

मृत्यु से बचने के लिये लोग विभिन्न उपाय करते हैं। कुछ लोग रसायन, औषध आदि का सेवन करते हैं तो दूसरे प्राण का निरोध तथा मृत्युञ्जय मन्त्र का जप करते देखे जाते हैं। यह सत्य है कि सदाचार, जप, तप, समुचित आहार-विहार से व्यक्ति दीर्घायु और स्वस्थ रहता है परन्तु काल के कराल हाथों से कोई भी नहीं बच सकता। जो उत्पन्न हुआ है, उसकी मृत्यु अवश्यम्भावी है। जैसे अग्नि में जो कुछ डाला जाता है वह उसे भस्मसात् कर देती है वैसे ही मृत्यु के पाश से कोई बच नहीं सकता। वह सबको अपना ग्रास बना लेती है।

हे वरुणदेव! **होत्रादहं बिभ्यदायम्** इस मृत्यु के भय से बचने के लिये मैं आपकी शरण में आया हूँ। मैंने सुना है—**तमेव विदित्वाऽति मृत्युमेति** उस परमेश्वर को जानकर ही मृत्युञ्जयी बन सकता है; और कोई दूसरा उपाय या मार्ग नहीं है। तुम शरणागत वत्सल हो। जो तेरी शरण में आ जाता है, उसे फिर किसी का भय नहीं रहता। तुम्हारा वरुण नाम भी इसीलिये है कि शरणागत को आप अपने सुरक्षा कवच से आच्छादित कर लेते हो। मुझे अन्यत्र कहीं पर भी कोई सुरक्षित स्थान प्राप्त नहीं हुआ जहाँ मृत्यु का भय नहीं हो।

आपकी शरण में आने का दूसरा कारण यह है कि **नेदेव मा युनजन्नत्र देवाः** कहीं ये इन्द्रियाँ मुझे अपनी ओर आकर्षित नहीं कर लें। ये इन्द्रिय रूपी अश्व अपने-अपने विषयों की ओर दौड़ लगा रहे हैं। **पराञ्चि खानि व्यतृणत् स्वम्भूस्तस्मात् पराङ्पश्यति नान्तरात्मन्** (कठो० ४.१) आपने इन्हें बाहर की ओर बनाया है। आँखें बाह्य संसार को देखती हैं, कान बाहर का शब्द सुनते हैं, नासिका गन्ध का ग्रहण, त्वचा स्पर्श और जिह्वा रस का आस्वादन करती है। इन्हें बाहर के विषयों से हटाकर मोक्ष को चाहने वाला कोई विरला ही अन्तर्मुख होता है तब चक्षु आभ्यन्तर दिव्य प्रकाश एवं पाँच कोषों का दर्शन करते हैं। कान दिव्य शब्द, नासिका दिव्य गन्ध, त्वचा दिव्य स्पर्श और रसना दिव्य रस का आस्वादन करने लगती है। हे प्रभो! इन बलवान् इन्द्रियों को वश में करने के लिये मुझे और कोई उपाय नहीं सूझ पाया सो तुम्हारी शरण में आया हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि अब ये इन्द्रियाँ बाह्य विषयों से पराङ्मुख हो अन्तर्मुख होने लगेंगी और मैं इनके सहयोग से आन्तरिक अनुभूतियों का ज्ञान करते हुये आपके स्वरूप का भी प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त कर अपने को सर्वथा सुरक्षित बना मृत्यु के भय से मुक्त हो जाऊँगा।

आपके शरणागत होने का तीसरा कारण यह है—**तस्य मे तन्वो बहुधा निविष्टाः** मेरा यह शरीर पञ्चकोषों से युक्त है जिनमें बहुत-सी शक्तियाँ सन्निहित हैं जिनका साक्षात्कार विषयासक्त व्यक्ति नहीं कर पाता। इस स्थूलशरीर, अन्नमय कोष में ही विभिन्न तन्त्र मिल कर इसे क्रियाशील बना रहे हैं। प्राणमय कोष इसे ऊर्जा प्रदान कर रहा है। मन एवं कर्मेन्द्रियाँ कर्मों में प्रवृत्त हो रही हैं। बुद्धि और ज्ञानेन्द्रियाँ ज्ञानप्राप्ति में संलग्न हैं और आनन्दमय कोष में आत्मा परमात्मा विराजमान हो रहे हैं। महर्षि पतञ्जलि ने योगदर्शन के विभूतिपाद में कहा है—**ततोऽणिमादिप्रादुर्भावः कायसम्पत्तद्धर्मानभिघातश्च** (योग० ३.४५) पृथिवी आदि पञ्चभूतों के जय से योगी को अणिमा, लघिमा, महिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, वशित्व, ईशित्व कामावसायित्व आदि आठ सिद्धियों की प्राप्ति होती है। अन्य भी बहुत सी सिद्धियों का वर्णन किया है। वस्तुतः ये सिद्धियाँ प्रभु की ओर ले जाने वाले मार्ग की पथ-प्रदर्शक हैं।

परन्तु आहार, निद्रा, भय, मैथुन में प्रवृत्त हुआ मैं **अग्निः** उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने के स्वभाव वाला होता हुआ भी **एतमर्थं न चिकेता** इन रहस्यों से अनभिज्ञ हूँ। मेरी बुद्धि पर तमोगुण का आवरण छा गया है। मन एवं इन्द्रियाँ विषयों की ओर दौड़ रहे हैं। आपने तो मुझे इस सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी और सर्वगुण सम्पन्न बना करके मुझे यहाँ जन्म दिया है जिससे कि मैं इन दिव्य गुणों, पञ्चकोषों एवं आत्मा के सामर्थ्य को बढ़ा आपका दर्शन कर सकूं। तदपि मुझे मार्ग दिखाई नहीं दे रहा। जैसे रात्रि के समय मार्ग भूल जाने पर पथिक किसी स्थान में प्रकाश को देख उसी ओर आशा भरी दृष्टि से जाता है वैसे ही मैं भी सत्यमार्ग का पथिक बन आपकी शरण में आया हूँ। मुझे क्या करना चाहिये और किनका परित्याग, इसका ज्ञान आप ही कराने में सक्षम हो। आपके पथ-प्रदर्शन से मेरी जीवन यात्रा सुगम हो जायेगी और मैं अपने गन्तव्य मोक्ष को प्राप्त कर सकूंगा। **- क्रमशः**

"शत हस्त समाहर सहस्त्र हस्त सं किर"
"सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो"

पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य

आर्यजन दिल खोलकर दान दें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ितों सहायतार्थ दान की अपील पर प्राप्त दान की सूची

गतांक से आगे -

485	आर्यसमाज हनुमान रोड	100000
	आर्य समाज नरेला दिल्ली द्वारा एकत्र राशि	
486	सर्वश्री प्रिं. दिनेश आर्य	1100
487	डॉ. धर्मवीर वैदिक	200
488	चांद सिंह मान (सोनीपत)	1100
489	नरेश	1100
490	करतार सिंह सहरावत	200
491	राजपाल आर्य (सोनीपत)	500
492	राजपाल (राजन ठेकेदार)	500
493	डॉ. धीरेन्द्र आर्य	500
494	डॉ. सुरेन्द्र शर्मा	200
495	जगदीश शर्मा	1100
496	मा. राजसिंह आर्य	500
497	लाला हेमराज बंसल	1100
498	सोमवीर शास्त्री	500
499	सत्येन्द्र खत्री	500
500	श्रीमती ज्योति आर्या	500
501	पं. रामकुमार	251
502	जयपाल आर्य	500
503	रामपाल आर्य	200
504	पं. ब्रह्मदत्त कौशिक	200
505	सी. आर. दहिया	200
506	वीरेन्द्र शास्त्री	500
507	सत्येन्द्र आर्य	500
508	धर्मवीर आर्य	250
509	धर्मवीर बागेश्वर	250
510	सुखवीर जी	250
511	गुप्तदान	100
512	आर्यसमाज नरेला	8199

– क्रमशः

इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य सन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे। – *महामन्त्री*

उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ तन-मन-धन से सहयोग करें आर्यजन

दानी सज्जन अपनी दान राशि निम्न बैंक खातों में जमा कराएं

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' - खाता सं. 09481000000276
पंजाब एंड सिंध बैंक, IFSC - PSIB 0020948 MICR - 110023121

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' - खाता सं. 1098101000777
केनरा बैंक, IFSC - CNRB 0001098 MICR - 110015025

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 91001000898 4897
एक्सिज बैंक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

'आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड' - खाता सं. 0649201001 2620
ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, देहरादून, IFSC - ORBC 0100 649

विशेष : जो सज्जन/संस्थाएं अपनी दान राशि पर आयकर छूट चाहते हैं वे अपनी राशि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम सभा के उपरोक्त बैंक खाते में जमा कराएं। कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9540040339 पर श्री विजय आर्य को सूचित** करके **aryasabha@yahoo.com** तथा **dapsvijayarya@gmail.com** पर डिपोजिट स्लिप ईमेल करें ताकि उन्हें रसीद भेजी जा सके।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के खाते में राशि जमा कराने वाले सज्जन कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9760195053 पर श्री पृथ्वीराज आर्य** को सूचित करें ताकि रसीद जारी की जा सके।

– विनय आर्य, महामन्त्री

श्रावणी हमें क्या चिन्तन देती है

- महात्मा चैतन्य मुनि

अविवेक ही व्यक्ति के समस्त दु:खों का कारण माना गया है। इसलिए जो भी जीवन में सुख चाहता है उसे विवेकशील होना अनिवार्य है। विवेकी बनने के लिए वेद ही सर्वोत्तम ग्रन्थ है क्योंकि वेद स्वयं परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान है। जिस प्रकार सूर्य के अभाव में अंधकार में डूबकर व्यक्ति ठोकरें खाता है, ठीक उसी प्रकार वेद ज्ञान के अभाव में व्यक्ति भटक जाता है। महर्षि पतञ्जलि जी ने अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश को क्लेश माना है तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अविद्या को ही अन्य क्लेशों का भी जनक माना है। उनके अनुसार अविद्या ही समस्त दु:खों का कारण है। व्यक्ति, समाज, परिवार या राष्ट्र वेदानुयायी बनकर ही सुख, शान्ति और स्मृद्धि को प्राप्त हो सकता है। इसलिए महर्षि दयानन्द जी ने अपना कोई अलग सम्प्रदाय न चलाकर लोगों को एक ही सत् परामर्श किया - "वेदों की ओर लौटो"। वेद स्वयं ही ज्ञान का पर्याय है, अत: अज्ञानान्धकार का निराकरण करने के लिए वेदों का स्वाध्याय नितान्त अनिवार्य है। वेद का मनन-चिन्तन करने के लिए प्राचीनकाल से ही जन साधारण का वेद के मनीषियों के यहां जाकर ज्ञान प्राप्त करने की परम्परा रही है जो कालान्तर में लुप्तप्राय होती चली गई। मगर आर्यसमाज जैसी उत्कृष्ट संस्था द्वारा आज भी वेद स्वाध्याय के प्रति जनसाधारण में जागरुकता पैदा करने के लिए वेद सप्ताह अर्थात् श्रावणी पर्व का आयोजन किया जाता है। आर्यसमाज संस्था की यह विशेषता है कि यह किसी मत-मजहब को लेकर व्यक्तियों को बांटने का कार्य नहीं करती बल्कि परमात्मा के ज्ञान वेद को लेकर समूची मानवता को एकता के सूत्र में बांधकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार द्वारा व्यक्ति के चतुर्दिक विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। श्रावणी के अवसर पर वेद स्वाध्याय के प्रति लोगों में न केवल रूचि पैदा की जाती है बल्कि इस अवसर पर बड़े-बड़े पारायण यज्ञों का भी आयोजन किया जाता है। यह एक अत्यधिक स्तुत्य प्रयास है अन्यथा आज प्राचीन संस्कृति को लोग भूलते चले जा रहे हैं और अनेक प्रकार के सम्प्रदायों में बांटकर वातावरण को स्वार्थमय तथा विषासक्त बनाते चले जा रहे हैं।

वेद हमें भौतिक और आध्यात्मिक रूप से सम्पन्नता प्राप्त करने की प्रेरणा देता है। आज व्यक्ति भौतिकतावाद में इतना अधिक संलिप्त हो चुका है कि इसे प्राप्त करने के लिए वह पूरी तरह से विवेकहीन हो चुका है। अनैतिकता का सहारा लेकर व्यक्ति उन सुख-सुविधाओं को जुटाने में लगा हुआ है जिनसे तृप्ति मिलने वाली नहीं है। जो व्यक्ति को तृप्ति तक पहुंचा सकती है उस आध्यात्मिकता को सब भूलते जा रहे हैं। शारीरिक आवश्यकताओं की भूख इतनी अधिक बढ़ गई है कि व्यक्ति इससे आगे सोचने के लिए तैयार नहीं है। ये भौतिक प्रसाधन उसे अन्तत: तृप्ति देने वाले नहीं है। इस सत्य का भी उसे पग-पग पर आभास होता रहता है। मगर मृगतृष्णा रूपी भटकाव में वह निरन्तर भटकता चला जा रहा है। ये सांसारिक भोग उसे हर बार चेतावनी देते हैं कि हममें तुम्हें तृप्त करने की सामर्थ्य नहीं है मगर व्यक्ति बार-बार भोगों में डूबकर और अतृप्त होकर भी वहीं तृप्ति खोज रहा है, जहां वह है ही नहीं। वह इस जीवन रूपी चौराहे पर खाली का खाली खड़ा है.... अतृप्त है... रो भी रहा है.... तड़प भी रहा है मगर पुन: पुन: भौतिक भोगों की आग में स्वयं को झोंकता भी चला जा रहा है। उसकी स्थिति ठीक इस प्रकार की हो गई है मानों कोई अपनी हथेली पर आग का अंगारा लेकर खड़ा हुआ हो, उसे छोड़ने के लिए भी तैयार नहीं है और उसकी जलन के कारण तड़प भी रहा हो। वह इतना भी ज्ञान नहीं रखता कि जलन देने वाली अग्नि को तो उसने स्वयं ही पकड़ रखा है। इस त्रासदी से आज अधिकतर लोग रुबरु हो रहे हैं। ऐसे ही लोगों को सम्बोधित करते हुए मानों वेद कहता है :-

अन्ति संतं न जहोति अन्ति सन्तं न पश्यति। देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।

अथर्व 10/8/32

अर्थात् पास बैठे हुए को छोड़ता नहीं, पास बैठे हुए को देखता नहीं। उसे उस परमपिता परमात्मा के काव्य वेद को देख जो न कभी मरता है और न कभी पुराना होता है।

इस मन्त्र के भावों को यदि हम गहराई से मनन करें तो हमारे जीवन का कांटा ही बदल सकता है। संक्षिप्तता से इसका भाव हम इस प्रकार समझ सकते हैं कि परमात्मा के काव्य अर्थात् प्रकृति और वेद ज्ञान के सम्यक अध्ययन से हम इस तथ्य का जान लेते हैं कि इस प्रकृति में सुख तो है मगर आनन्द नहीं है। यदि वास्तव में आनन्द का पान करना है तो शारीरिक एवं भौतिक सृष्टि में उसकी तलाश छोड़कर उसे आध्यात्मिकता में खोजना होगा। आत्मा को उसकी वास्तविक खुराक मिलने पर ही तृप्ति मिल सकती है। इसलिए वेद मन्त्र हमें चेतावनी देते हुए कह रहा है कि यदि तुम सुख और आनन्द चाहते हो तो परमात्मा के शाश्वत नियमों का अवलोकन करके आत्मा रूपी रथी के इस रथ को परमात्मा की ओर मोड़ना होगा। परमात्मा के सान्निध्य में जाकर ही तुझे परमशान्ति और तृप्ति मिल सकती है। हमारा वेद सप्ताह मानाने का उद्देश्य भी यही होना चाहिए कि हम जीवन की पगडण्डी पर चलते-चलते अचानक जिन झाड़-झंखाड़ों में उलझ गए हैं उससे निकलने वाले के लिए वेदज्ञान को व्यावहारिकता में लाएं।

आज समाज, राष्ट्र और समूचा विश्व आतंक और भय के वातावरण में गुजर रहा है। कुछ वर्ष पूर्व जो सौहार्द और प्रेम का वातावरण था वह लुप्तप्राय ही हो गया है। मानव इतना हृदयहीन हो गया है कि जहां उसे दूसरों का उपकार करने से प्रसन्नता होती थी आज वह अपकार करके प्रसन्न होने लगा है। अलगाववाद, मजहबवाद, जातिवाद, द्वोत्रवाद और सम्प्रदायवाद के काले बादल हमारे चारों ओर मंडरा रहे हैं। कब किसके घर पर बिजली गिर जाए कुछ पता नहीं। इन समस्याओं का समाधान खोजा तो जा रहा है। मगर स्थिति यह है कि "मरज बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की"। हम अपने ही देश को लें। यहां पर प्रत्येक नेता या दल अपनी-अपनी वोट की राजनीति खेल रहा है, राष्ट्र के सामूहिक विकास की किसी को चिन्ता नहीं है। तुष्टिकरण और वोट की राजनीति ने ऐसी दीवारें खड़ी की हैं जो दिन-प्रतिदिन ओर भी अधिक ऊंची होती जा रही हैं। चाहे व्यक्तिगत हों, परिवार और समाज तथा देश की हों सभी समस्याओं का समाधान हमें वेद में मिल सकता है क्योंकि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। सत्य एक ऐसी रामबाण औषधि है जिससे सभी रोग समाप्त हो सकते हैं। वेद हमें सत्य की कसौटी पर रहकर जीना सिखाता है। हमारे साथ समस्या यही है कि हमने झूठ का सहारा ले रखा है तथा एक झूठ को सही ठहराने के लिए हम एक और झूठ का सहारा ले रहे हैं। इस प्रकार इन झूठों के अम्बार तले हम दब गए हैं। हमें इस बात को गांठ बांध लेना चाहिए कि झूठ के सहारे हमारा किसी भी क्षेत्र में उत्थान नहीं हो सकता है। यह ठीक है कि जैसे रोगी को कड़वी दवाई खाने में तो अच्छी नहीं लगती है मगर उसका परिणाम सुखद होता है, ठीक इसी प्रकार वेद के सत्य पर चलना हमें पहले तो बहुत अटपटा और अव्यावहारिक लग सकता है क्योंकि हमें अपने-अपने स्वार्थ के दायरों में सिमट कर जीने की आदत पड़ गई है। मगर वास्तविकता यह है कि हमें अपने-अपने संकुचित दायरों ये बाहर निकलकर सत्यता को स्वीकार करना होगा क्योंकि सत्य की सोच ही अन्तत: ठीक होती हे। वेद हमें सत्य के साथ जुड़ने की ही प्रेरणा देता है। हम चिन्तन करें कि आखिर मानव-मानव के भीतर ये दूरियां क्यों बढ़ती चली जा रही हैं। होता यह है कि अपने तप, त्याग और साधना से कोई भी व्यक्ति जब उच्चतम स्तरों को छू लेता है तो उसके बहुत से अनुयायी भी बन जाते हैं। ये अनुयायी उन आदर्शों पर तो चल नहीं पाते हैं। मगर मात्र लकीर के फकीर बन जाते हैं। उस महापुरुष ने जिस तप और त्याग से जीवन की ऊंचाइयों को छूआ था उस प्रक्रिया को नजर अन्दाज करके उस महापुरुष की ही पूजा-अर्चना शुरू कर दी जाती है। आज हमारे समाज में ऐसे पैगम्बरों, अवतारों और गुरुओं की मानों बाढ़ सी आ गई है। गुरु होना तो बुरी बात नहीं; मगर गुरुड्म प्रथा ने इस समाज का बहुत अहित किया है। इससे मानवीय एकता को बहुत बड़ा धक्का लगा है तथा परमात्मा के स्थान पर व्यक्तियों की पूजा होने लगी है। इस व्यक्ति पूजा ने अन्य अनेक प्रकार की कुरीतियों को भी जन्म दिया है। इसी के आधार पर व्यक्तियों के बनाए अलग-अलग ग्रन्थों ओर उपदेशों को प्रमाण मानने की अज्ञानता का भी जन्म हुआ है। अलग-अलग नामों और पूजा पद्धतियों ने एक मानव धर्म को अनेक सम्प्रदायों में बांट दिया है। यह एक अटल सत्य है कि कोई भी महापुरुष परमात्मा नहीं बन सकता है और अल्प ज्ञानी होने के कारण न ही उसके द्वारा दिया गया ज्ञान निर्भ्रान्त और पूर्णतया सत्य हो सकता है। मगर आज जैसे मानों अंधे ही अंधों को रास्ता दिखा रहे हैं। इसलिए अज्ञानता के गडढे में गिरकर चतुर्दिक विनाश हो रहा है। तथाकथित इन भगवानों की भीड़ में परमात्मा कहीं खो गया लगता है और मत-मजहब एवं सम्प्रदायों की अज्ञानता में मानवीय गुणों का ह्रास हुआ है। एक सामूहिक सोच जिससे हमारी चतुर्दिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होना था, विलुप्त हो गई है। अत: आज इस बात की परम आवश्यकता है कि मानव मूल्यों की पुन: स्थापना करने के लिए एक सामूहिक सोच का विकास किया जाए, जो वेद के आधार पर ही हो सकती है; क्योंकि एकमात्र वेद पूर्णतया सार्वभौमिक और परमात्मा की सत्य वाणी है।

- 81/एस-4, सुन्दर नगर (हिमाचल प्रदेश) - 174402

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 400/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड,नई दिल्ली

श्री कृष्ण जन्माष्टमी (28 अगस्त) पर विशेष

श्रीकृष्ण की राजनीति और वर्तमान उग्रवाद

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे-युगे।।

योगिराज कृष्ण के जन्म से लगभग एक सहस्र वर्ष पूर्व ही इस देश की अधोगति आरम्भ हो गई थी। योगिराज ने अपने नीति के प्रयोग से इस अधोपतन को समाप्त करने का भरपूर प्रयास किया। उनकी इस राजनीति का ही परिणाम था कि जो भारत देश महाभारत काल में ही विदेशियों का गुलाम होने की अवस्था में था, वह देश चार हजार वर्ष बाद में गुलाम हुआ। श्रीकृष्ण जी के पश्चात् भी हमारे जिस राजनेता ने भी उनकी नीति का अनुसरण किया, इतिहास में उसने स्थाई स्थान पाया।

भारतीय इतिहास में महाभारत के पश्चात् हम चाणक्य को प्रथम राजनेता के रूप में पाते हैं जिसने कृष्ण जी के आदर्श राज नियमों को अपनाया तथा चन्द्रगुप्त को आगे रखकर भारत की सीमाओं को मजबूत किया। फिर शिवाजी महाराज ने उसी नीति को अपनाते हुए दक्षिण भारत तथा बन्दा बैरागी, हरि सिंह नलवा, महाराजा रणजीत सिंह आदि ने उत्तर भारत मे इसी राजनीति का अवलम्बन किया। इसी का परिणाम था कि ये महापुरुष सदा अपने सभी प्रकार के अभियानों में सफल हुए। भारत स्वाधीन हुआ। उस समय देश अति विकट अवस्था में था। उस अवस्था में देश पुन: बंटकर नष्ट हो जाता है यदि कृष्ण नीति को अपनाकर सरदार पटेल देशी रियासतों की लगाम न कसते।

इस प्रकार के कृष्ण को यदि महर्षि दयानन्द ने अपने शब्दों में कहा कि - **"कृष्ण ने जन्म से मरण पर्यन्त कोई पाप नहीं किया"** तो कोई अतिश्योक्ति नहीं की। महाभारत का वह काल था जिस में ब्राह्मण अपनी मर्यादाओं को भूल रहे थे। जन्म को जाति का आधार बनाने में लगे थे। तभी तो एकलव्य व कर्ण को समान शिक्षा देने में बाधा खड़ी की गई। यह वह समय था, जब क्षत्रियों की मर्यादाएं समाप्त हो रही थीं। तभी तो श्रीकृष्ण ने वैदिक मर्यादाओं को स्थापित करने का प्रयास किया। देश कौरव और पाण्डव दो दलों में बंटा था। राष्ट्रीय भावना के लोग पाण्डवों के साथ थे तथा विदेशी शक्तियां कौरवों के साथ थीं। तभी तो योगीराज ने पाण्डव का पक्ष लेकर न केवल देश को सुरक्षित ही किया; अपितु खण्डित देश को एक केन्द्रीय संगठन भी दिया। इस संगठन की कमान युधिष्ठिर को दी।

श्रीकृष्ण जी की राजनीतिक सूझ इसी से स्पष्ट होती है कि वह राजनीति में दया के स्थान पर जैसे को तैसा के मार्ग पर चलने वाले थे। यही कारण था कि जब कौरव सेना ने भी सभी लड़ाई के नियमों का उल्लंघन करते हुए बालक वीर अभिमन्यु का वध कर दिया तो कृष्ण ने उनके साथ वैसा ही व्यवहार करने का निर्देश देकर कुछ भी गलत नहीं किया। इसी नीति के माध्यम से ही तो कर्ण, भीष्म पितामह, अश्वथामा, काल यवन, आदि यहां तक कि अन्त में दुर्योधन को भी मारकर या पराजित कर अपनी अद्भुत राजनीति का परिचय दिया। यह ठीक भी है। राजनीति में पराजय का नाम मृत्यु है तथा जय का नाम है स्वर्गीक आनन्द। जीतना ही धर्म है और हारना अधर्म है। यही कारण है कि जब सन्धि का सन्देश लेकर श्री कृष्ण कौरव दरबार में गए तो पहले से ही ऐसी तैयारी कर गए कि उनके साथ छल न होने पावे। स्वयं तो कौरव दरबार में खड़े थे किन्तु उनके रक्षकों ने पूरे क्षेत्र को घेर रखा था। जब कृष्ण जी के औजस्वी विचारों से कौरव दल के सभी लोग उनके पक्ष में आ गए तो दुर्योधन ने हिरासत में लेनी की सोची, किन्तु दूरदर्शी कृष्ण जी की पहले से ही की हुई तैयारी यहां काम आई। धूर्त दुर्याधन उनका बाल भी बांका न कर सका।

यह कृष्ण जी की नीतियों का ही

- शेष पृष्ठ 7 पर

पुराणों के कृष्ण बनाम महाभारत के कृष्ण

कृष्ण जन्माष्टमी पर सभी हिन्दू धर्म को मानने वाले भगवान श्री कृष्ण जी महाराज को याद करते हैं. कुछ उन्हें गीता का ज्ञान देने के लिए याद करते हैं कुछ उन्हें दुष्ट कौरवों का नाश करने के लिए याद करते हैं.पर कुछ लोग उन्हें अलग तरीके से याद करते हैं.

फिल्म रेडी में सलमान खान पर फिल्माया गया गाना **"कुड़ियों का नशा प्यारे,नशा सबसे नशीला है, जिसे देखों यहाँ वो, हुसन की बारिश में गीला है, इश्क के नाम पे करते सभी अब रासलीला है,मैं करूँ तो साला, Character ढीला है,मैं करूँ तो साला, Character ढीला है।"**

सन 2005 में उत्तर प्रदेश में पुलिस अफसर डी. के. पांडा राधा के रूप में सिंगार करके दफ्तर में आने लगे और कहने लगे की मुझे कृष्ण से प्यार हो गया हैं और में अब उनकी राधा हूँ। अमरीका से उनकी एक भगत लड़की आकर साथ रहने लग गयी। उनकी पत्नी वीणा पांडा का कथन था की यह सब ढोंग हैं।

इस्कॉन के संस्थापक प्रभुपाद जी एवं अमरीका में धर्म गुरु दीपक चोपड़ा के अनुसार " कृष्ण को सही प्रकार से जानने के बाद ही हम वेलेंटाइन डे (प्रेमिओं का दिन) के सही अर्थ को जान सकते हैं।

इस्लाम को मानने वाले जो बहुपत्नीवाद में विश्वास करते हैं सदा कृष्ण जी महाराज पर 16000 रानी रखने का आरोप लगा कर उनका माखोल करते हैं।

स्वामी दयानंद अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में श्री कृष्ण जी महाराज के बारे में लिखते हैं की पूरे महाभारत में श्री कृष्ण के चरित्र में कोई दोष नहीं मिलता एवं उन्हें आपत पुरुष कहा है। स्वामी दयानंद श्री कृष्ण जी को महान विद्वान सदाचारी, कुशल राजनीतीज्ञ एवं सर्वथा निष्कलंक मानते हैं फिर श्री कृष्ण जी के विषय में चोर, गोपियों का जार (रमण करने वाला), कुब्जा से सम्भोग करने वाला, रणछोड़ आदि प्रसिद्ध करना उनका अपमान नहीं तो क्या है? श्री कृष्ण जी के चरित्र के विषय में ऐसे मिथ्या आरोप का आधार क्या है? इन गंदे आरोपों का आधार हैं पुराण। आइये हम सप्रमाण अपने पक्ष को सिद्ध करते हैं।

पुराण में गोपियों से कृष्ण का रमण करना : विष्णु पुराण अंश ५ अध्याय १३ श्लोक ५९, ६० में लिखा है - वे गोपियाँ अपने पति, पिता और भाइयों के रोकने पर भी नहीं रुकती थी रोज रात्रि को वे रति "विषय भोग" की इच्छा रखने वाले कृष्ण के साथ रमण (भोग) किया करती थी। कृष्ण भी अपनी किशोर अवस्था का मान करते हुए रात्रि के समय उनके साथ रमण किया करते थे।

कृष्ण उनके साथ किस प्रकार रमण करते थे पुराणों के रचियता ने श्री कृष्ण को कलंकित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। भागवत पुराण स्कन्द 10 अध्याय 33 शलोक 17 में लिखा है।

- डॉ. विवेक आर्य
drvivekarya@yahoo.com

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी
MDH हवन सामग्री
मात्र 70/- किलो (5,10,20 किलो की पैकिंग)
प्राप्ति स्थान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, दूरभाष - 23360150

प्रथम पृष्ठ का शेष

67वें स्वाधीनता दिवस पर ध्वजारोहण करते सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्यबलदेव जी, साथ में हैं स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, हरयाणा सभा के प्रधान आचार्य विजय पाल जी, दिल्ली सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय एवं इसके अन्तर्गत संस्थानों को संचालित करने वाली संस्था आर्य विद्या सभा गु.कु. के अध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी का सम्मान

(बाएं) समाराह में न आ पाने के कारण गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. रामप्रकाश जी को उनके निवास पर सम्मान पत्र भेंट करते दिल्ली सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री धर्मपाल आर्य एवं कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी। (दाएं) गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी को सम्मान पत्र भेंट करते महाशय धर्मपाल, डॉ. योगानन्द शास्त्री एवं आचार्य बलदेव जी।

गुरुकुल कांगड़ी के अन्तर्गत संचालित कन्या गुरुकुल देहरादून की आचार्या सुश्री डॉ. सविता आनन्द का सम्मान साथ में हैं कन्या गुरुकुल हरिद्वार की प्राचार्या डॉ. संगीता विद्यालंकार, श्रीमती पूजा आर्या एवं श्रीमती शारदा आर्या

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव की ओर उत्तराखण्ड त्रासदी से पीड़ित परिवारों की सहायतार्थ 15 लाख रुपये की राशि का चैक सार्वदेशिक सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी को सौंपा गया। चैक सौंपते श्री कन्हैयालाल आर्य एवं अन्य पदाधिकारी

आर्यसमाज पंजाबी बाग पश्चिम के सभागार में आयोजित इस सम्मान समारोह में उपस्थित आर्यजनों से खचाखच भरा हॉल। आर्यजनों की अपार उपस्थिति को देखते हुए हॉल के बाहर बैठने एवं स्क्रीन व्यवस्था की गई, जिससे पूरा बरामदा भी भर गया था।

पुस्तक समीक्षा

स्वामी दर्शनानंद जीवन चरित

लेखक- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी मूल्य-250 रुपये पृष्ठ संख्या-296
प्रकाशक - विजय कुमार गोविन्दराम हासानंद समीक्षक : डॉ० विवेक आर्य

स्वामी दर्शनानंद जी महाराज की निर्वाण शताब्दी के अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्द लेखक एवं इतिहासकार, शताधिक आर्य जीवनियों के लेखक, आर्यसमाज के उर्दू साहित्य के प्रमाणिक विद्वान, सैकडों आर्य युवकों के प्रेरणा स्रोत्र प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी की लोह लेखनी से निकले एक और पुष्प के लिए आर्य जगत की उनको बधाई। इस वृद्धावस्था में भी जिज्ञासु जी का पुस्तक लेखन में जोश अनेक नौजवानों से भी बढ़कर हैं। स्वामी दर्शनानंद जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन स्वामी दयानंद द्वारा आरम्भ किये गये वेदों के पुनरुद्धार एवं जन जागरण के कार्य के प्रचार के लिए समर्पित था। स्वामी जी क्या नहीं थे, आप उच्च कोटि के दार्शनिक लेखक भी थे, अविजित शास्त्रार्थ महारथी भी थे, अनेकों गुरुकुलों के संस्थापक भी थे, अनेकों आर्य पत्रिकाओं के प्रकाशक भी थे, व्याकरण के उच्च कोटि की पुस्तकों के प्रकाशक भी थे, फक्कड़ साधू भी थे, शुद्धि के रण के महारथी भी थे और सबसे बढ़कर दयानंद भगत थे।

स्वामी जी विषय में अगर उनके समग्र कार्यों को एक पंक्ति में लिखना हो तो में वही शब्द कहना चाहूँगा जो स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज ने कहे थे कि 'आर्य समाज में जितना भी कार्य हुआ हैं उसका 40% अकेले स्वामी दर्शनानंद जी द्वारा किया गया है।"

इस पुस्तक का यह द्वितीय संस्करण हैं, प्रथम 1990 में छापा गया था। मेरा यह मानना हैं की किसी भी लेखक के जीवन काल में उनकी कृति का दूसरी अथवा उससे अधिक बार छपना वैदिक श्राद्ध के समान हैं क्यूंकि इससे लेखक को मनोवांछित सुख की प्राप्ति होती हैं जो शेष जीवन के लिए संजीवनी का कार्य करती हैं।

अधिक न कहते हुए मैं इस पुस्तक में से स्वामी जी के जीवन के कुछ अत्यंत रोचक प्रसंगों का वर्णन करना चाहूँगा जिन्हें पढ़कर पाठक स्वामी जी के अद्वितीय जीवन के दर्शन कर उनसे प्रेरणा पा सकेंगे।

१. यदि मकान में आग जावे तो जैनी क्या करेंगे? - केसरगंज अजमेर में जैनियों से शास्त्रार्थ के समय एक विद्वान ने खड़े होकर कहा की 'अहिंसा परमो धर्म' जो जैन धर्म ग्रंथों में हैं, वह आर्य धर्म में व वेद में नहीं पाया जाता। स्वामी जी ने कहा की जैन समाज की अहिंसा नाम मात्र की हैं। जैन भाई जल की एक बूंद में एक लाख से भी ऊपर जीवों का होना मानते हैं। इसलिए जल उबालकर पीते हैं। यदि किसी बड़े भवन में पाँच सौ जैन साधु रहते हो और उस के भीतर आग लग जावे तो उस अवस्था में जैन बन्धु क्या करेंगे? क्या जल से आग बुझावेगे वा नहीं? यदि नहीं बुझाते तो जैन साधु मरते हैं और यदि जल को डाल-डालकर अग्नि-शमन करते हैं तो असंख्य जीवों की हिंसा होती हैं। स्वामी जी के तर्क का उन पंडित से कोई उत्तर नहीं बना।

२. पुनर्जन्म : स्वामी जी का कहीं मुसलमानों से शास्त्रार्थ हो रहा था जिसका विषय पुनर्जन्म था। आपने प्रतिपक्षी मौलाना से पूछा की कयामत के पश्चात कब्रों से मृत लोग उसी शरीर को लेकर खड़े होंगे, जो शरीर कब्रों में दबाया गया या उन्हें कोई नया शरीर मिलेगा?

यह प्रश्न मौलाना के लिए बड़ा गंभीर एवं विचित्र भी था। क्या उत्तर दे? मुस्लमान तो मानते ही हैं की जब कयामत आयेगी तो मुर्दे कब्रों से उठेंगे। यह कौन विचार करता हैं कि कैसे उठेंगे? उसी शरीर के साथ जो दबाया गया था अथवा किसी नये शरीर के साथ खड़े होंगे?

मौलाना के मुख से निकला - नया शरीर होगा। स्वामी जी ने कहा, 'मौलाना साहब, बस नये शरीर का प्राप्त होना ही तनासुख (पुनर्जन्म) कहलाता हैं। स्वामी जी की मौलिक सोच का प्रतिपक्षी और सुनने वालो सभी पर अत्यंत प्रभाव पड़ा था।

३. स्वामी जी उस समय मृत शैया पर थे तब उन्हें सूचना मिली की एक व्यक्ति विधर्मी बनने वाला हैं। स्वामी जी ने अपने सेवकों से कहा मुझे शैया समेत उस व्यक्ति के पास ले चलो। वहाँ जाकर शैया पर लेटे लेटे स्वामी जी ने अपने तर्कों द्वारा उस व्यक्ति की सभी शंकाओं का समाधान कर दिया, जिससे न केवल वह विधर्मी बनने से बच गया अपितु वह वैदिक भी बन गया।

ऐसे अनेक घटनाएँ स्वामीजी के जीवन चरित में जिज्ञासु जी ने लिखी हैं जिनको पढ़-पढ़कर मन न केवल उत्साहित हो उठता हैं अपितु स्वामी जी के द्वारा जीवन में की गई साधना से मन उनके लिए सम्मान से भर उठता हैं।

इस समीक्षा को पढ़कर शायद ही कोई ऐसा आर्य वीर ऐसा हो जो स्वामी दर्शनानंद जी से परिचित होना नहीं चाहेगा।

इस पुस्तक के साथ साथ स्वामी जी के अप्रतिम ट्रैक्टस का संग्रह दर्शनानंद ग्रन्थ संग्रह के नाम से गोविन्द राम हासानंद द्वारा प्रकाशित किया गया हैं जो की न केवल पठनीय हैं अपितु संग्रह करने के योग्य भी हैं। स्वयं भी पढ़े और अपने साथ वालो को भी अवश्य स्वामी जी से परिचित कराये। इससे न केवल आपका ज्ञान वर्धन होता हैं, आपको प्रेरणा मिलती हैं अपितु लेखक के साथ साथ प्रकाशक का भी मनोबल बढ़ता हैं।

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-1

वेद प्रचार एवं श्रावणी

2 सितम्बर 8 सितम्बर, 2013

अथर्ववेदीय यज्ञः प्रातः 7 से 8:30 बजे
ब्रह्मा : डॉ. धर्मवीर
प्रवचन : डॉ. महेश विद्यालंकार
भजनोपदेश : श्री नरेश सोलंकी

-इन्द्र सेन साहनी, प्रधान

पृष्ठ 4 का शेष

परिणाम था कि यह देश, जो उस समय विदेशियों की गुलामी झेलने की अवस्था में पहुंच चुका था, को सुदृढ़ कर न केवल इससे बचाया अपितु इसके लगभग चार हजार वर्ष बाद भी यह देश बचा ही रहा। आज जिस प्रकार हमारा भारत देश विदेशी उग्रवाद की चपेट में फंसा है ठीक उसी प्रकार ही मर्यादा पुरुषोत्तम राम के शासन से पूर्व तथा युधिष्ठिर के शासन से पूर्व भी उग्रवाद जैसे व विदेशी लोगों के कोप से ग्रसित था। राम व कृष्ण दो ऐसे महान नेता व राजनीतिकार इस देश को प्राप्त हुए, जिनकी सफल राजनीति ने उस समय के विदेशी उग्रवाद को समूल नष्ट कर एक ठोस व मजबूत केन्द्रीय सत्ता इस देश में स्थापित कर देश को ऐसी सुदृढ़ पृष्ठभूमि दी कि फिर हजारों वर्षों तक उग्रवाद यहां अपना फन न उठा सका। आज ठीक वैसी ही अवस्था से देश निकल रहा है। प्रतिदिन यहां न केवल विदेशियों की घुड़कियां मिल रही हैं। इसके साथ ही साथ प्रतिदिन उग्रवादियों द्वारा किए जा रहे बम धमाकों, गोलियों आदि के कारण हजारों भारतीय मारे जा रहे हैं।

हमारे राजनेता अपनी दलगत राजनीति में इतने उलझे हुए हैं कि देश के इस महान संकट के समय भी एक होकर लड़ने के स्थान पर एक दूसरे को नीचा दिखाने का प्रयास कर रहे हैं। ऐसी अवस्था में देश का अवनति की ओर जाना निश्चित है। इसी का परिणाम है कि कहीं अतिवृष्टि हो रही है और कहीं अनावृष्टि, कहीं तो किसी के गोदाम भरे हुए हैं तो किसी को दो जून का भोजन भी नहीं मिल रहा। सभी स्वार्थ के वशीभूत हो रहे हैं।

आज आवश्यकता ही नहीं बल्कि इस विदेशी प्रायोजित आतंकवाद पर काबू पाकर देश को ठोस आधार देने की है। यह तभी सम्भव होगा जब हमारे राजनेता श्री कृष्ण जी की राजनीति को न केवल समझेंगे अपितु इसे व्यवहार में लाएंगे। यही एक मात्र हल है इस उग्रवाद के मुंह से देश को निकालकर पुनः परम वैभव पर लाने का। आर्यसमाज ही एकमात्र संस्था है जो यह मार्ग वर्तमान स्वार्थी राजनेताओं को दिखा सकता है। अतः आर्यसमाजियों को मजबूती से इस राजनीति को अपनाना चाहिए।

- डॉ० अशोक आर्य
आर्य कुटीर, 116, मित्र विहार,
मंडी डबवाली - 125104

प्रथम पृष्ठ का शेष

दिल्ली की समस्त आर्य संस्थाओं की ओर से भव्य अभिनन्दन श्रीफल, माला एवं शॉल ओढ़ाकर किया गया। इस अवसर पर उन्हें सम्मान पत्र भी भेंट किया गया।

इस अवसर पर सम्बोधित करते हुए आचार्य बलदेव जी ने कहा कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्याल की नई टीम की ओर समस्त विश्व की नजरें लगी हैं। हमें विश्वास है इनके नेतृत्व में गुरुकुल अपनी पुरातन स्थिति को पुनः प्राप्त कर सकेगा।

महाशय धर्मपाल जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द के स्वप्नों के गुरुकुल का निर्माण हमारा लक्ष्य होगा। इसके लिए हम सब मिलकर कार्य करेंगे।

कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी ने कहा कि वर्तमान में गुरुकुल के हालात दयनीय हैं इसका संचालन और सम्वर्धन एक कठिन चुनौति है।

वरिष्ठ उप प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने कहा गुरुकुल की भूमि एवं सम्पत्ति की रक्षा करने का कार्य हमारी प्रथम वरीयता होगी। हम अपने प्राणपण से इसी हर सम्भव सहायता करेंगे।

कुलाधिपति डॉ. रामप्रकाश कुरुक्षेत्र में आयोजित राजकीय समारोह में सम्मिलित होने के कारण नहीं पधार सके थे। इस कारण कुलाधिपति डॉ. रामप्रकाश जी का सम्मान सभा की ओर से वरिष्ठ उप प्रधान श्री धर्मपाल आर्य एवं कुलपति डा. सुरेन्द्र कुमार जी ने उनके आवास पर पहुंचकर श्रीफल, माला एवं शॉल ओढ़ाकर तथा सम्मान पत्र भेंट करके अभिनन्दन किया। समारोह का शुभारम्भ यज्ञ, ध्वजारोहण एवं पंजाब से पधारे सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ श्री जगत वर्मा के देशभक्ति गीतों से हुआ। ध्वजारोहण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी ने किया।

इस अवसर पर शहीदों को समस्त आर्य समाज की तरफ से श्रृद्धांजलि दी गई। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष डॉ. योगानन्द शास्त्री, उपस्थित थे।

इस अवसर पर सम्बोधित करते हुए डॉ. योगानन्द शास्त्री ने कहा प्राचीन भारतीय संस्कृतिक मूल्यों एवं धरोहर की रक्षा करना इस विश्वविद्यालय की स्थापना का उद्देश्य था। इसे पूर्ण करने में सबके सहयोग की आवश्यकता है।

इस अवसर पर उत्तराखण्ड त्रासदी से पीड़ितों की सहायतार्थ आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव की ओर से 15 लाख की राशि का चैक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी को सौंपा गया।

सभा प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि हम सब मिलकर आर्यजनता की आकांक्षाओं को पूर्ण करने का प्रयास करेंगे।

इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के व.उप. प्रधान सुरेन्द्र रैली, महामन्त्री श्री राजीव आर्य, हरियाणा सभा के प्रधान आचार्य विजय पाल, उत्तर प्रदेश सभा के मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द, उत्तराखण्ड सभा के उप प्रधान डॉ. विनय विद्यालंकार, मुख्याधिष्ठाता आचार्य यशपाल एवं आर्यसमाज के प्रधान श्री सत्यानन्द आर्य ने भी उपस्थित आर्यजनों को सम्बोधित किया।

कार्यक्रम के अन्त में सभी उपस्थित महानुभावों के लिए प्रीतिभोज एवं कार्यक्रम की व्यवस्थाओं के लिए आर्यसमाज पंजाबी बाग पश्चिम के अधिकारियों का धन्यवाद किया गया।

वैदिक तीन दिवसीय कार्यशाला का केरल राज्य में आयोजन

वैदिक कार्यशाला "सत्य प्रकाश" का आयोजन आर्य समाज वैली नेली मायानूर आटापलम (पंडित ऋषि रामनगर) में 19 से 21 जुलाई 2013 को रखा गया। महर्षि दयानन्द आर्य गुरूकुल ऋषि उद्यान अजमेर से आचार्य श्री सोमदेव जी और श्री बलेश्वर मुनि इस सुअवसर पधारे।

इस कार्यशाला का शुभारम्भ आर्यजगत के विख्यात विद्वानों द्वारा वैदिक अग्निहोत्र पद्धति से डा. पी माघवन जी प्रधान भारतीय विद्यानिकेतन दक्षिण क्षेत्र की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

इस कार्यशाला में लगभग तीस शिविरार्थियों ने भाग लिया। अधिकतर शिविरार्थि बुद्धिजीवी थे, उनमें डाक्टर, इन्जीनीयर, अध्यापक और वकील आदि थे। कुछ लोग अन्य व्यवसायों से भी सम्बन्धित थे।

इस कार्यशाला में कार्यक्रम को भिन्न भिन्न सत्रों में विभाजित किया गया और प्रत्येक सत्र में भिन्न-भिन्न विषयों की चर्चा की गई। चर्चा के विषय मुख्यता, नित्य कार्य विधि, वेद , दर्शन परिचय , आर्यसमाज , स्वामी दयानन्द , शिक्षा और स्वतन्त्रता के क्षेत्र में आर्य समाज और स्वामी दयानन्द जी का योगदान आदि पर आचार्य श्री सोमदेव जी और बलेश्वर मुनि ने विस्तार से चर्चा की।

आचार्य जी के अतिरिक्त बलेश्वर मुनि. और श्री टी. आर. बालचन्द्रन ने भी उपरोक्त विषयों पर अपने विचार रखे। श्री के. एम. राजन एवं श्रीमती सरोजनी शंकर जी ने आचार्य श्री सोमदेव जी के हिन्दी में प्रस्तुत विचारों को मलयालम भाषा में अनुवादित किया। बलेश्वर मुनि जी ने अपने विचारों को आंगल भाषा में रखा जिनको मलयालम भाषा में बताने की आवश्यकता नहीं हुई। इन शिविरार्थियों में दो सदस्य इसाई मत से भी सम्बन्धित थे। उनका नाम श्रीमान जोस और श्री जे. कुमार था। वे दोनों वैदिक विचारों से अत्यधिक प्रभावित हुए।

– बलेश्वर मुनि, ऋषि उद्यान

आर्यसमाज लेखू नगर त्रिनगर
श्रावणी पर्व समारोह

6 सितम्बर 8 सितम्बर, 2013

यज्ञब्रह्मा : आचार्य डॉ. देव शर्मा वेदालंकार

भजनोपदेश : श्री अशोक कुमार (मुरैना)

– लक्ष्मण नारायण, मन्त्री

डॉ0 सुन्दरलाल कथूरिया सम्मानित

इन्द्रप्रस्थ साहित्य भारती, दिल्ली प्रदेश द्वारा दीनदयाल शोध संस्थान झण्डेवालान में लोकार्पण एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पूर्व उप प्रधानमन्त्री श्री लालकृष्ण आडवाणी ने हिन्दी के वरिष्ठ समालोचक, सहृदय कवि, वैदिक विद्वान एवं भाव नगर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया जी को शाल, पुष्पगुच्छ एवं श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया गया। प्रो. कथूरिया को यह सम्मान आपातकाल में कृष्ण मन्दिर में भोगी गई यातनाओं और आपातकाल पर लिखी कविताओं के कारण दिया। उल्लेखनीय है कि प्रो. कथूरिया के 45 से अधिक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं और उन्हें 60 से अधिक पुरस्कारों से अलंकृत किया जा चुका है। आर्य सन्देश परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

धर्म-शिक्षकों की आवश्यकता

राष्ट्र सहायक उच्च माध्यामिक विद्यालय बीकानेर और उससे सम्बन्धित अन्य कुछ विद्यालयों में वैदिक धर्म, मानवीय जीवन-मूल्य, राष्ट्रभक्ति, नैतिक शिक्षा, संस्कृत , योग, आसान प्राणायाम, व्यायाम, सुरक्षा उपाय आदि को लिखने पढ़ाने हेतु 5 अध्यापक (स्त्री/पुरुष) की आवश्यकता है। शैक्षणिक योग्यता- स्नातक/स्नातकोतर शास्त्री/आचार्य या समकक्ष। आर्यसमाज के गुरूकुल में पढ़े हुए आर्यसमाज व महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों-सिद्धांतों को जानने-मानने-श्रद्धा रखने वाले। बी.एड/शिक्षा शास्त्री/एम.एड.को वरीयता। वेतन - दस से बीस हजार (योग्यतानुसार) प्रतिमाह। आवेदन की अन्तिम तिथि-30 सितम्बर 2013 है। इच्छुक व्यक्ति सादे कागज़ पर अपने समस्त सम्बन्धित विवरणों को लिखकर, अपने चित्र व प्रमाण पत्रों को प्रतिलिपि सहित ईमेल से भेजें। **– प्राचार्य, राष्ट्र सहायक उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयनारायण व्यास कॉलोनी, बीकानेर (राज.)** **Email: rsvjnv@gmail.com**

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2012 दिल्ली के अवसर पर घोषित

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-डरबन (दक्षिण अफ्रीका)

(विश्व वेद सम्मेलन) 28, 29, 30 नवम्बर एवं 1 दिसम्बर, 2013

सम्मानीय आर्य बन्धुओं! सादर नमस्ते!

आपको यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली** एवं **आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका** के तत्त्वावधान में इस वर्ष **अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 28, 29, 30 नवम्बर एवं 1 दिसम्बर, 2013 को द. अफ्रीका की राजधानी डरबन में** सम्पन्न होने जा रहा है। इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए अनेक देशों के प्रतिनिधि डरबन पहुंच रहे हैं। भारतवर्ष से भी इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु बड़ी संख्या में आर्यजन पहुंचेंगे।

सभी इच्छुक आर्यजन जो इस सम्मेलन में भाग लेने जाना चाहते हैं वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के माध्यम से भाग ले सकेंगे। **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा स्वीकृत सदस्यों को ही द. अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा अपने यहां प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार कर उनकी व्यवस्था करेगी।** अनेकों आर्यजन डरबन सम्मेलन के इस अवसर पर दक्षिण अफ्रीका महाद्वीप का भ्रमण भी करना चाहते हैं, इस कारण उनकी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए डरबन के अतिरिक्त द. अफ्रीका के अन्य स्मरणीय एवं महत्त्वपूर्ण शहरों की यात्रा का भी कार्यक्रम बनाया गया है।

विस्तृत जानकारी/यात्रा विवरण/आवेदन पत्र हमारी वैबसाइट www.thearyasamaj.org से डाउनलॉड किए जा सकते हैं।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 26 अगस्त, 2013 से रविवार 1 सितम्बर, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 29/30 अगस्त, 2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 28 अगस्त, 2013

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में उपलब्ध
श्रावणी पर्व पर वितरणार्थ लघु साहित्य

आपको विदित ही है कि आर्यसमाज द्वारा प्रतिवर्ष रक्षाबन्धन से जन्माष्टमी तक श्रावणी पर्व आयोजित किया जाता है। श्रावणी विशेष तौर पर स्वाध्याय के पर्व के रूप में जाना जाता है।

इस वर्ष **रक्षा बन्धन (मंगलवार) 20 अगस्त, 2013** को तथा **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (बुधवार) 28 अगस्त, 2013** को है। दोनों पर्वों के बीच का सप्ताह आर्यसमाजों द्वारा वेद प्रचार समारोह के रूप में मनाया जाता है।

सभा की ओर से जन साधारण को आर्यसमाज के कार्य, उद्देश्य, इतिहास, मान्यताएं, धार्मिक विश्वास, नियम, महर्षि दयानन्द, वेद, एवं वैदिक संस्कृति के ज्ञान को सरलता–सुगमता से पहुंचाने के लिए कुछ विशेष सामग्री तैयार की है जो कि इस अवसर पर विशेष रूप से युवाओं तथा नव आगन्तुकों को बांटी जा सकती है। इनमें –

एक निमन्त्रण : जन साधारण को आर्यसमाज की विशेषताएं? इतिहास एवं वर्तमान बताते हुए आर्यसमाज से जुड़ने के प्रेरणा हैं (मूल्य 10/–)

मानव निर्माण के स्वर्णिम सूत्र : आर्य समाज के मन्तव्यों का ज्ञानः (मूल्य 3/–)

लघु सत्यार्थ प्रकाश : बच्चों हेतु सरल भाषा में सत्यार्थ प्रकाश (मूल्य 10/–)।

नियमानुसार छूट उपलब्ध

अधिक जानकारी के लिए श्री विजय आर्य 9540040339 से सम्पर्क करें।

दयानन्द मठ, दीनानगर की स्थापना के 75 वर्ष पूर्ण होने पर
हीरक जयन्ती समारोह
18–20 अक्तूबर, 2013

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधाकर समारोह को सफल बनाएं

निवेदक : स्वामी सदानन्द सरस्वती, अध्यक्ष मो. 9478256272

ब्रेल लिपि में
महर्षि दयानन्द जीवनी
मात्र 1000/–रु.

आर्यजन अपनी आर्यसमाज की ओर से अंध विद्यालयों को भेंट दें।

नेमस्लिप्स

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने की छोटी सी शुरुआत : कापी–किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 21 स्लिप्स का एक सैट मात्र 10/– रुपये प्रति शीट।

माता कमला आर्या धर्मार्थ ट्रस्ट के सहयोग से

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

वैदिक विनय
मात्र 125/– रुपये

प्राप्ति हेतु संपर्क करें।

–: प्राप्ति स्थान : –

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड,नई दिल्ली

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर